विकास के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति जरूरी : प्रो दास

केंद्रीय विवि, झारखंड का 13वां स्थापना दिवस समारोह

विशेष संवाददाता, रांची

केंद्रीय विवि, झारखंड (सीयूजे) के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कहा है कि विवि अब किशोरावस्था की आयु पार कर युवावस्था में प्रवेश करनेवाला है. हमारे समक्ष अनेक चुनौतियां हैं. हमें दृढ़ इच्छाशक्ति और अग्रसोची प्रवृति को अपनाना होगा. प्रो दास मंगलवार को सीयूजे के 13वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे.

प्रो दास ने कहा कि हमें विगत वर्षों के अनुभव व उपलब्धियों को ध्यान रखते हुए निरंतर आगे बढ़ना होगा. रजिस्ट्रार प्रो केएल हरि कुमार ने कहा कि पिछले 13 साल में विवि ने कई उतार-चढ़ाव के

स्थापना दिवस समारोह में मौजूद अतिथि.

बावजूद शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रगति की है. डीन प्रो मनोज कुमार ने कहा कि विवि ने एक बेहतरीन शैक्षणिक वातावरण का निर्माण किया है. प्रो सारंग मेधेकर ने कहा कि विवि के शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक संकाय सदस्यों में प्रतिभा की कमी नहीं है. प्रो आरके डे ने नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में विवि के समक्ष चुनौतियों को रखांकित किया. संचालन डॉ राजेश कुमार व धन्यवाद ज्ञापन डॉ मनोज कुमार ने किया. कार्यक्रम में प्रो रत्नेश, प्रो भगवान सिंह, प्रो देवव्रत सिंह, प्रो एसके समदर्शी, प्रो सुभाष यादव, डॉ बटेश्वर सिंह, डॉ केबी सिंह, डॉ मयंक रंजन, डॉ रंजीत मंडल, पीआरओ नरेंद्र कुमार, डॉ उपेंद्र सत्यार्थी, लेफ्टिनेंट कर्नल उज्ज्वल कुमार, डॉ जगदीश सौरभ आदि मौजूद थे.

कैंपस जागरण

चार मार्च तक भरे जाएंगे बीबीए-एलए

जासं, रांची : रांची यूनिवर्सिटी ने बीबीए-एलएल
माध्यम के लिए परीक्षा फार्म भरे जाएंगे। मिली ज
आफलाइन माध्यम से परीक्षा फार्म और शुल्क भ

13 वर्ष का हुआ सीयूजे, राज्य में शैक्षणिक वातावरण को बढ़ाने में दे रहा सहयोग

सुधार, प्रदर्शन और बदलाव के मंत्र के साथ आगे बढ़ने का लिया संकल्प

स्थापना दिवस

जासं, रांची : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) के 13वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन चेरी मनातू परिसर में किया गया। अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने की। कुलपति ने कहा कि झारखंड केंद्रीय विवि अब किशोरावस्था की आयु पार करके युवावस्था में प्रवेश करने वाला है। हमारे समक्ष कई चुनौतियां हैं और विवि परिवार ही इसे ठोस आधार प्रदान कर सकता है।

इसके लिए हमें दृढ़ इच्छाशक्ति और विजनरी प्रवृति को अपनाना होगा। हमें विगत वर्षों के अनुभव और उपलब्धियों को ध्यान रखते हुए और उसका मूल्यांकन करते हुए निरंतर आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुधार, प्रदर्शन और बदलाव के मंत्र के साथ चलना होगा। उसके बाद ही हमारा विश्वविद्यालय सफलता की बुलंदियों को छू

कार्यक्रम में पहुंचे मुख्य अतिथि का किया गया स्वागत ● जागरण

पिछले वर्षों के अनुभव व उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए और उसका मूल्यांकन करते हुए आगे बढ़ना होगा

सकेगा। विवि के कुलसचिव प्रो केएल हरिकुमार ने पिछले 13 सालों में सीयूजे की अनेक उपलब्धियां को सामने रखा। कहा कि तमाम उतार चढ़ाव के बावजूद हमने शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक क्षेत्रों में काफी कार्य किया है। विवि के डीन (शैक्षणिक) प्रो मनोज कुमार ने कहा कि तमाम परेशानियों को सहते हुए इस विश्वविद्यालय ने राज्य में एक बेहतरीन शैक्षणिक वातावरण का निर्माण किया है। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में सीयूजे ने शोध और प्रकाशन के क्षेत्र में अनेक मुकाम हासिल किए हैं। पूरी उम्मीद है कि आने वाले वक्त में हम और नए मुकाम हासिल करेंगे। विवि के अनुसंधान और विकास प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो सारंग मेधेकर ने कहा कि सीयूजे के शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक संकाय सदस्यों में प्रतिभा की कमी नहीं है। सभी में शोध के प्रति गहरी रुचि और लगाव है। विवि के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो आरके डे ने विश्वविद्यालय में कोविड पूर्व और बाद की स्थितियों एवं उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय की यात्रा शानदार रही है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में विवि के समक्ष चुनौतियों की भी जानकारी दी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो रत्नेश विश्वाक्सेन, प्रो भगवान सिंह, प्रो देवव्रत सिंह, प्रो एसके समदर्शी, प्रो सुभाष यादव, डा बटेश्वर सिंह, डा केबी सिंह, डा मयंक रंजन, डा रंजीत मंडल, पीआरओ नरेंद्र कुमार, डा उपेंद्र सत्यर्थी, ले.कर्नल उज्ज्वल कुमार आदि मौजूद थे।

12 वर्षों में सीयूजे ने शिक्षा और अनुसंधान के हर क्षेत्र में कई ख्यातियां प्राप्त की

विवि सफलता की नई ऊंचाइयों पर चढ़ रहा है : कुलपति

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : अपने अस्तित्व के अंतिम 12 वर्षों के दौरान, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय ने शिक्षा और अनुसंधान के लगभग हर क्षेत्र में कई ख्याति प्राप्त की है। अपनी यात्रा के दौरान, विश्वविद्यालय ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां भी हासिल की हैं। इसमें प्रतिभाशाली और ऊर्जावान संकाय और स्टाफ सदस्यों की एक टीम शामिल है जिन्होंने एक जीवंत अकादमिक माहौल बनाया है। कई संकाय सदस्य डीबीटी-रामलिंगस्वामी फेलोशिप, डीएसटी-रामानुजम फैलोशिप, डीएसटी-इंस्पायर, यूजीसी-एफआरपीआदि सहित प्रतिष्ठित परियोजनाओं और फेलोशिप के प्राप्तकर्ता हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित डीबीटी-बिल्डर कार्यक्रम, डीएसटी-सीओई जीईटी सहित कई महत्वपूर्ण शोध कार्यक्रम हैं। यूजीसी, डीएसटी, डीबीटी, सीएसआईआर, आईसीएसएसआर, एमओईएफ, एमओईएस, इसरो आदि जैसे विभिन्न फंडिंग एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित व्यक्तिगत अनुसंधान एवं विकास अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा कार्यक्रम, डीएसटी,एफआईएसटी कार्यक्रम। कुलपति प्रो. क्षितिज भूषण दास के गतिशील और दूरदर्शी नेतृत्व में, विश्वविद्यालय सफलता की नई ऊंचाइयों पर चढ़ रहा है। इसने वर्ष 2022 से सभी कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों में बहु प्रवेश और निकास प्रणाली के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) को समग्र रूप से लागू करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ की स्थापना के उपाय शुरू किए गए हैं। नए वैधानिक पदों का प्रस्ताव और सृजन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, बहु-विषयक-अंत:विषय प्रक्रिया, क्रेडिट हस्तांतरण के लिए यूजीसी स्वयं विनियम, अप्रेंटिसशिप-इंटर्नशिप एंबेडेड डिग्री प्रोग्राम पर यूजीसी दिशा निर्देश,यूजीसी लर्निंग में परिकल्पित विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में एकाधिक प्रवेश और निकास प्रणाली (एमईईएस) से संबंधित विभिन्न अध्यादेश और विनियम, यूजीसी लर्निंग परिणाम आधारित पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एलओसीएफ) और समझौता ज्ञापन (सहयोग नीति दिशानिर्देश) के लिए मसौदा नीति को कार्यान्वयन के लिए अनुमोदित किया गया है। विश्वविद्यालय सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) बढ़ाने पर विशेष जोर दे रहा है। इस संबंध में आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। अब, विश्वविद्यालय विस्तार की स्थिति में है क्योंकि यह इतिहास, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, सांख्यिकी, संस्कृत और अनुवाद अध्ययन सहित कई नए विभाग खोलने की योजना बना रहा है। अक्टूबर में हुई 20वीं अकादमिक परिषद की बैठक में इस संबंध में प्रस्ताव पहले ही लिया जा चुका है। प्रस्ताव आगे की मंजूरी के लिए यूजीसी को भेजा जाएगा। यह निर्णय निश्चित रूप से विश्वविद्यालय में एक नए युग की शुरूआत करने जा रहा है क्योंकि सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय और समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावाए पर्यावरणए समाज और सतत विकास के लिए शासनए और नवाचार, नवाचार और उद्यमिता केंद्र, विश्वविद्यालय में स्वदेशी ज्ञान और सतत विकास केंद्र खोलने की सर्वसम्मति से हाल ही में आयोजित एसी बैठक के अन्य प्रमुख आकर्षण थे। पीएचडी की नई मसौदा नीति को सर्वसम्मति से मंजूरी देकर विश्वविद्यालय ने एसी बैठक में एक और मील का पत्थर पार किया। अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन की मसौदा नीति, विश्वविद्यालय में अनुसंधान और विकास की मसौदा नीति, परामर्श नियम और बौद्धिक संपदा अधिकारों के लिए नीति। वर्तमान कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास के तत्वावधान में, विश्वविद्यालय अनुसंधान और उत्कृष्टता संस्थान बनने के अपने मिशन पर अच्छी तरह से तैयार है और निकट भविष्य में कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने के लिए नियत है।

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय का 13वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

अनुभव व उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए बढ़ना है आगे : प्रो. क्षिति भूषण दास

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय(सीयूजे) का 13वां स्थापना दिवस समारोह का आयोजन चेरी-मनातू परिसर में किया गया। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं विश्वविद्यालय कुलगीत के साथ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने की। इस अवसर पर कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने कहा कि झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय अब किशोरावस्था की आयु पार करके युवावस्था में प्रवेश करनेवाला है। अतः हमारे समक्ष अनेक चुनौतियां हैं ,जिसे विश्वविद्यालय परिवार ही इसे ठोस आधार प्रदान कर सकता है। इसके लिए हमें दृढ़ इच्छाशक्ति और अग्रसोची प्रवृति को अपनाना होगा। हमें विगत वर्षों के अनुभव और उपलब्धियों को ध्यान रखते हुए और उसका मूल्यांकन करते हुए निरंतर आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुधार,प्रदर्शन और बदलाव मंत्र के साथ चलना होगा। उसके बाद ही हमारा विश्वविद्यालय सफलता की बुलंदियों को छू सकेगा। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर केएल हरिकुमार ने पिछले 13 सालों में केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखण्ड की अनेक उपलब्धियां को रखांकित करते हुए कहा कि तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद हमने शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक क्षेत्रों में काफी प्रगति की है। विश्वविद्यालय के डीन (शैक्षणिक) प्रोफेसर मनोज कुमार ने कहा कि तमाम तूफान और झंझावातों को सहते हुए इस विश्वविद्यालय ने एक बेहतरीन शैक्षणिक वातावरण का निर्माण किया है। उन्होंने कहा कि हाल के सालों में सीयूजे ने शोध और प्रकाशन के क्षेत्र में अनेक मुकाम हासिल किए हैं। आशा है आनेवाले व×क्त में हम और नए मुकाम हासिल करेंगे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान और विकास प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रोफेसर सारंग मेधेकर ने कहा कि सीयूजे के शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक संकाय सदस्यों में प्रतिभा की कमी नहीं है। सभी मेंशोध के प्रति गहरी रुचि और लगाव दोनों हैं। विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के निदेशक प्रोफेसर आरके डे ने विश्वविद्यालय में कोविड पूर्व और पश्चात की स्थितियों एवं उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय की यात्रा शानदार रही है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में विश्वविद्यालय के समक्ष चुनौतियों को भी रखांकित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो. रत्नेश विश्वाक्सेन,प्रो. भगवान सिंह,प्रो. देवव्रत सिंह,प्रो. एस के समदर्शी,प्रोफेसर सुभाष यादव,डॉ. बटेश्वर सिंह,डॉ. के बी सिंह, डॉ मयंक रंजन,डॉ रंजीत मण्डल,पीआरओ नरेंद्र कुमार,डॉ उपेंद्र सत्यर्थी,ले.क. उज्वल कुमार,डॉ जगदीश सौरभ आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनोज कुमार एवं संचालन डॉ राजेश कुमार ने किया।